कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, भुवनेश्वर

हिंदी विभाग : ई - पत्रिका

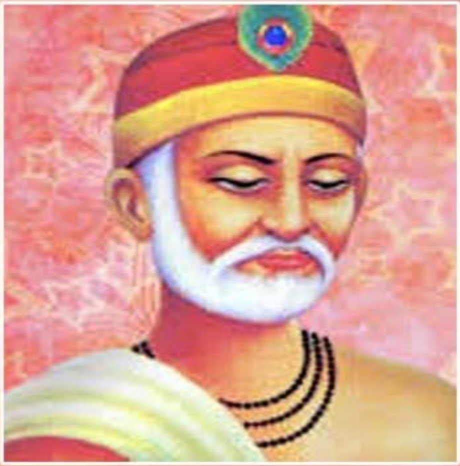

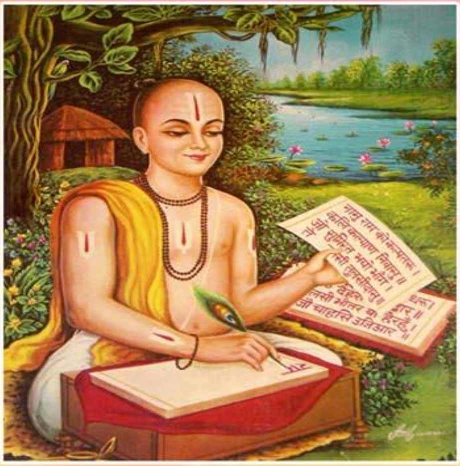

हिंदी भारती

हिंदी भक्ति साहित्य

अगस्त-२०१८

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. सोनाली राउत

कु. सस्मिता महंती

संपादकीय

"हिंदी भारती" का जुलाई अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। हमारी ई - पत्रिका ने हमेशा प्रयास किया है कि छात्राओं में निहित सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करती रहे। अतः इस अंक के मुखपृष्ठ की रूपकल्पना एवं अन्य चित्र संयोजन विभाग की छात्रा एवं पत्रिका की सह संपादिका कु. सोनाली राउत ने किया है। पत्रिका के इस अंक में "आपकी बात" शीर्षक के अंतर्गत विभाग की छात्राओं की प्रतिक्रियायें शामिल की गई हैं, साथ ही आप विशिष्ठ पाठकों एवं विद्‍वद्‍जनों के संदेशों और सुझावों का "आपकी बात" शीर्षक के अंतर्गत सदैव स्वागत है, क्योंकि "आपकी बात" हमारे लिये अखण्ड प्रेरणा का स्रोत है।

हम आशा करते हैं कि हर अंक की तरह आप इस अंक को भी स्वीकार करते हुए भविष्य में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और आपका आदर और स्नेह हमें इसी तरह मिलता रहेगा। अब हमारी पत्रिका को आप हमारे महाविद्‍यालय के वेब साइट www.knwcbbsr.com पर भी पढ़ सकते हैं।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	नाम	पृ. सं.
1.	डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन	लेख (संग्रहित)	लिज़ा मिश्र	5
2.	गुरु	कविता	मनीषा साहू	8
3.	जन्माष्टमी	लेख	सोनाली राउत	9
4.	समय	लेख	कादम्बिनी पण्डा	11
5.	सन्त कवि कबीर	लेख	हाफिजा बेगम	12
6.	समय का सदुपयोग	लेख	शरीफा शरवारी	14
7.	जायसी एवं पद्मावत	लेख	शबाना बेगम	15
8.	रामचरितमानस में समंवयवाद	लेख	लिज़ा मिश्र	18
9.	सूरदास की भक्ति पद्धति	लेख	श्रद्धांजलि भउल	22
10.	नदी का रास्ता	कहानी	पिंकी सिंह	25
11.	ऋतुओं का परिवर्तन	कविता	सोनाली सेठी	27
12.	गुरु का स्थान	कहानी (संग्रहित)	सस्मिता महान्ती	28
13.	आपकी बात	आपके विचार		29
14.	सवा सेर गेहूँ - प्रेमचंद	यू ट्यूब लिंक		31
15.	यादों के गलियारों से	चित्र स्मृतियाँ	यादों के गलियारों से	32

डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन

डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति और द्वितीय राष्ट्रपति थे। आप एक आदर्श शिक्षक, महान दार्शनिक और हिंदू विचारक थे। आपके श्रेष्ठ गुणों के कारण भारत सरकार ने सन् 1954 में आपको देश के सर्व्वोच सम्मान "भारत रत्न" से सम्मानित किया। आप यह पुरस्कार पाने वाले देश के पहले व्यक्ति थे। आपका जन्मदिन 5 सितंबर को होता है जो पूरे देश में "शिक्षक दिवस" के रूप में मनाया जाता है।

जन्म

डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को तमिलनाडु के तिरूतनी ग्राम (मद्रास) में एक ब्राहमण परिवार में हुआ था। उनके पुरखे सर्वपल्ली नामक गाँव में रहते थे इसलिए राधाकृष्णन के परिवार के सभी लोग अपने नामो के आगे सर्वपल्ली उपनाम लगाते थे। आपके पिता का नाम 'सर्वपल्ली वीरास्वामी' और माता का नाम 'सीतम्मा' था। राधाकृष्णन के 4 भाई और 1 बहन थी।

विद्यार्थी जीवन

राधाकृष्णन बचपन से ही मेधावी छात्र थे। उनको क्रिश्चियन मिशनरी संस्था लुथर्न मिशन स्कूल, तिरूपति में 1896-1900 के मध्य पढ़ने के लिए भेजा गया। मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, मद्रास से उन्होंने स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। स्नातक की परीक्षा 1904 में कला वर्ग में प्रथम श्रेणी में पास की। मनोविज्ञान, इतिहास और गणित विषय में विशेष योग्यता प्राप्त की। उन्होंने "बाईबिल" का अध्ययन भी किया। क्रिश्चियन कॉलेज में आपको छात्रवृत्ति मिली। 1916 में राधाकृष्णन ने दर्शनशास्त्र में एम॰ ए॰ किया और मद्रास रेजीडेंसी कॉलेज में दर्शनशास्त्र के सहायक प्राध्यापक पद पर नौकरी पा ली। अपने लेखों के द्वारा पूरी दुनिया को भारतीय दर्शन शास्त्र से परिचित करवाया।

वैवाहिक जीवन

उस जमाने में कम उम्र में शादियाँ होती थी। 1903 में 16 वर्ष की कम आयु में ही उनका विवाह 'शिवाकामू' से हो गया। उस समय उनकी पत्नी की आयु मात्र 10 वर्ष की थी। उनको तेलुगु भाषा का अच्छा ज्ञान था। वह अंग्रेजी भाषा भी जानती थी। 1908 में राधाकृष्णन दम्पति को एक पुत्री का जन्म हुआ।

राजनितिक जीवन

1947 में अपने ज्ञान और प्रतिभा के कारण डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन को संविधान निर्माण सभा का सदस्य बनाया गया। उनको अनेक विश्वविद्दालय का चेयरमैन बनाया गया। पंडित जवाहरलाल नेहरु 14 -15 अगस्त की रात्रि 12 बजे आजादी की घोषणा करने वाले थे पर इसकी जानकरी सिर्फ राधाकृष्णन को थी। वे एक गैर परम्परावादी राजनयिक थे। जो मीटिंग देर रात तक चलती थी उसने डॉ॰ राधाकृष्णन रात 10 बजे तक ही हिस्सा लेते थे क्यूंकि उनके सोने का वक्त हो जाता था।

उपराष्ट्रपति के पद पर कार्यकाल

1952 में सोवियत संघ बनने के बाद डॉ॰ राधाकृष्णन को संविधान के अंतर्गत उपराष्ट्रपति का एक नया पद सृजित करके उपराष्ट्रपति बनाया गया। पंडित नेहरु ने उनको यह पद देकर सभी को चौंका दिया। सभी लोग सोच रहे थे की कांग्रेस पार्टी का कोई नेता उपराष्ट्रपति बनेगा। सभी लोगों को उनके कार्य को लेकर संशय था, पर डॉ॰ राधाकृष्णन ने कुशलतापूर्वक अपना कार्य किया। संसद में सभी सदस्यों ने उनके काम की सराहना की। इनके विनोदी स्वभाव के कारण लोग आज भी इनको याद करते हैं।

भारत के द्वितीय राष्ट्रपति के रूप में कार्यकाल

सन 1962–1967 तक डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने भारत के द्वितीय राष्ट्रपति के रूप में कार्यकाल संभाला।

विश्व के जाने-माने दार्शनिक बर्टेड रसेल ने डॉ० राधाकृष्णन के राष्ट्रपति बनने पर अपनी प्रतिक्रिया इस तरह दी -

“यह विश्व के दर्शन शास्त्र का सम्मान है कि महान भारतीय गणराज्य ने डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन को राष्ट्रपति के रूप में चुना और एक दार्शनिक होने के नाते मैं विशेषत: खुश हूँ। प्लेटो ने कहा था कि दार्शनिकों को राजा होना चाहिए और महान् भारतीय गणराज्य ने एक दार्शनिक को राष्ट्रपति बनाकर प्लेटो को सच्ची श्रृद्धांजलि अर्पित की है”

सप्ताह में 2 दिन कोई भी व्यक्ति बिना किसी अपॉइंटमेंट के उनसे मिल सकता था। भारत के दूसरे राष्ट्रपति बनने के बाद डॉ० राधाकृष्णन हेलिकॉप्टर से अमेरिका के व्हाईट हाउस पहुंचे। इससे पहले कोई भी व्हाईट हाउस में हेलीकॉप्टर से नहीं गया था।

मानद उपाधियाँ

अमेरिका और यूरोप प्रवास से लौटने पर देश के अनेक प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों ने आपको मानद उपाधि देकर उनकी विद्वता का सम्मान किया-

सन् 1931 से 36 तक आन्ध्र विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर रहें। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में 1936 से 1952 तक प्राध्यापक रहें। कलकत्ता विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले जॉर्ज पंचम कॉलेज के प्रोफेसर के रूप में 1937 से 1941 तक कार्य किया। सन् 1939 से 48 तक काशी हिंदू विश्वविद्यालय के चांसलर रहें। 1946 में यूनेस्को में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। 1953 से 1962 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के चांसलर रहें।

भारत रत्न एवं अन्य पुरस्कार

ब्रिटिश सरकार ने 1913 में डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन को “सर” की उपाधि प्रदान की। 1954 में उपराष्ट्रपति बनने पर आपको भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने देश का सर्वोच्च्य सम्मान “भारत रत्न” से पुरस्कृत किया गया। 1975 में आपको अमेरिकी सरकार द्वारा “टेम्पलटन पुरस्कार” से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार को पाने वाले वह पहले गैर- ईसाई व्यक्ति हैं।

मृत्यु

डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की मृत्यु 17 अप्रैल 1975 को एक लम्बी बिमारी के बाद हुई। शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान हमेशा सराहा जाएगा। उनको सम्मान देने के लिए हर साल 5 सितंबर को "शिक्षक दिवस" पूरे देश में मनाया जाता है। इस दिन देश के श्रेष्ठ शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है।

लिज़ा मिश्र, +3 तृतीय वर्ष

गुरु

जो करते हैं राष्ट्र का निर्माण
जो बनाते हैं इंसान को इंसान,
जिसे करते हैं सभी प्रणाम
जिसकी छाया में मिलता ज्ञान
जो कराये सही दिशा की पहचान
वो हैं हमारे गुरु
ऐसे गुरु को शत- शत प्रणाम।

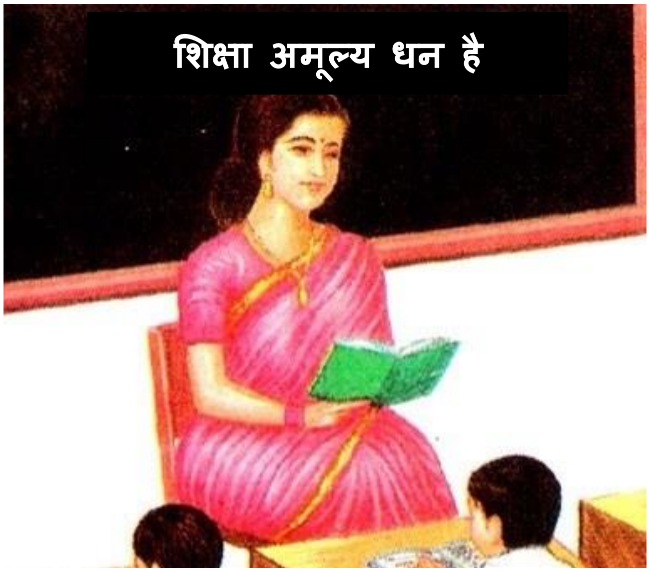

जीवन के हर अंधेरे में,
रौशनी दिखाते हैं आप,
बंद हो जाते है जब सारे दरवाज़े,
नया रास्ता दिखाते हैं आप,
सिर्फ किताबी ज्ञान ही नहीं,
जीवन जीना सिखाते हैं आप
जिसे देता ये जहाँ सम्मान

मनीषा साहू, +3 द्वितीय वर्ष

जन्माष्टमी

भारत में समय पाकर ऐसे-ऐसे महापुरुषों, कर्मयोगियों एव नीतिवानों ने जन्म लिया कि अपनी अनवरत कर्मठता, चारित्रिक दृढता, रंजक और रक्षक कार्यो के बल पर उन्होंने अवतार का-सा महत्त्व प्राप्त कर लिया। दूसरे कुछ लोगों का तो प्रकाट्य (अवतार) ही अन्याय-अत्याचार का नाश कर अन्यायियों-अत्याचारियों से जीवन-समाज के सत् तत्वों और सज्जनों की रक्षा करना था। भगवान श्रीकृष्ण एक इसी तरह के अवतार माने गए हैं। उन्हें भगवान् विष्णु के चौबीस अवतारों मे से एक सोलह-कला-सम्पूर्ण अवतार स्वीकार किया गया है, 'जन्माष्टमी' नामक हिन्दू पर्व का सम्बन्ध इन्हीं भगवान श्रीकृष्ण के जन्म अर्थात् अवतार के साथ है। उन्हीं के प्रकट होने के दिन को हर वर्ष बड़ी धूमधाम से, उत्सव-उत्साह के साथ मनाया जाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि - जन्माष्टमी का पावन पर्व योगीराज श्रीकृष्ण के जन्म भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है । श्रीकृष्ण मथुरा राज्य के सामंत वासुदेव-देवकी की आठवीं संतान थे । एक आकाशवाणी सुनकर कि वासुदेव-देवकी के गर्भ से जन्म लेने वाला बालक ही अत्याचारी और नृशंस राजकुमार कंस की मृत्यु का कारण बनेगा, भयभीत कंस ने उन्हें काल-कोठरी में बंद कर दिया । वहां जन्म लेने वाली देवकी की सात संतानों को तो कंस ने मार दिया, लेकिन आठवीं संतान को अपने शुभचिंतकों की सहायता से वासुदेव ने अपने परम मित्र नंद के पास पहुंचा दिया । वहीं नंद, यशोदा की गोद में पला-बढ़ा एवं बाद में मथुरा पहुंच कर कंस का वध करके अपने माता-पिता एवं नाना उग्रसेन को कारागार से मुक्त करवाया ।

जन्माष्टमी का पवित्र त्योहार इन्हीं की पवित्र स्मृति में, इनके किए प्रतिष्ठित कार्यों आदि के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए पूरे भारतवर्ष में हिंदू समाज में मनाया जाता है ।

त्योहार मनाने की विधि - सनातन धर्म को मानने वाले लोग इस दिन श्रद्धा एवं प्रेम से व्रत रखते हैं । घर में साफ-सफाई करके धूप-दीप से सजाते हैं । गांव में लोग कुछ दिन पहले से ही पकवान बनाने प्रारंभ कर देते हैं । मंदिरों को खूब सजाया जाता है । मंदिरों में सारा दिन भजन कीर्तन होता रहता है । भिन्न-भिन्न प्रकार की झांकियां दिखाई जाती हैं । अर्धरात्रि पर चंद्रमा के दर्शन करके सनातनी लोग अपना व्रत समाप्त करते हैं । दूध, फलाहार एवं मिष्ठान लेते हैं ।

शिशु को जन्म देने वाली माताओं को जन्म देने के तत्काल बाद जैसा खिलाया जाता है, इस अवसर पर बाँटने वाला प्रसाद भी अक्सर उसी प्रकार का हुआ करता है । इस प्रकार जन्माष्टमी का त्योहार प्रतिवर्ष आकर प्रेमपूर्ण माधुर्य भक्ति का सन्देश देने वाले श्रीकृष्ण के बालरूप का स्मरण तो हमें करा ही जाता है, अपना उचित अधिकार पाने के लिए कठोर संघर्ष और निष्काम कर्म का महत्त्व प्रतिपादन करने वाले योगीराज कृष्ण का स्मरण भी करा जाता है।

जन-जीवन में महत्ता - अत्याचारी कंस से प्रजा की रक्षा करने वाले श्रीकृष्ण तपस्वी, मनस्वी, योगी, दार्शनिक, महाराजा, सेनापति एवं कूटनीतिज्ञ थे । उन्होंने पापियों का नाश करके धर्म की स्थापना की थी । इस महापुरुष के जन्मदिन का गौरव जन्माष्टमी को प्राप्त है । भारत में इस त्योहार का अत्यधिक महत्त्व है ।

झांकियों का प्रदर्शन - गांवों तथा नगरों में अनेक स्थानों पर झूलों एवं झांकियों का प्रदर्शन किया जाता है जिन्हें देखने मंदिरों में लाखों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं । कई स्थानों पर बाजारों में भी झांकियां निकाली जाती हैं । स्कूलों में भी जन्माष्टमी का महत्त्व बच्चों को बताने के लिए कार्यक्रम किया जाता है । मंदिरों में गीता का अखंड पाठ किया जाता है । देवालयों की शोभा विशेषकर मथुरा एवं वृदांवन में देखने योग्य होती है । सांस्कृतिक दृष्टि से श्रीकृष्ण ने अपने श्रीमुख से गीता का प्रवचन दिया था, उसका पाठ किया करते हैं । इस प्रकार जन्माष्टमी का उत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है ।

गली-मुहल्लों में भी संस्था बना कर युवक और बच्चे तक आपस में तथा इधर-उधर से चन्दा उगाह कर झाँकियाँ बनाने-सजाने लगते हैं । झाँकियाँ जड़ मूर्तियों और जीवित व्यक्तियों दोनों के द्वारा बनाई-सजाई जाती हैं । झूले बनाए जाते हैं । उनमें नन्हें-मुन्ने बच्चों को बाल

कृष्ण की तरह सजा-संवार कर झूला झुलाया जाता है । जन्माष्टमी के दिन से पहले ही विशेष स्थानों पर विशेष रूप से बनाई-सजाई गई झाँकियाँ देखने वालो की भीड़ उमड पड़ा करती है । ठीक जन्माष्टमी वाले दिन तो शाम ढलते ही गली-मुहल्लों और मन्दिरों आदि में दर्शन करने आने वालों की विशाल भीड उमड़ आया करती है । कई बार तो उस पर नियंत्रण रख पाना भी समस्या बन जाया करता है ।

सोनाली राउत, +3 तृतीय वर्ष

बीता समय कभी दुबारा नहीं आता है, लेकिन समय का सही इस्तेमाल हो जाए तो वह हमेशा हमारे साथ होता है। ज्यादातर लोग समय का सही इस्तेमाल नहीं करते हैं। अगर सब लोग समय का इस्तेमाल करते तो उनको कामयाबी मिल जायेगी। दुनिया में अगर सबसे कीमती कोई चीज है तो वह है वक्त। जो वक्त पर कोई काम नहीं करते है तो उसको बाद में निराशा के अलावा कुछ नहीं मिलता। सब काम वक्त पर हो इसीलिए जरूरी है कि वक्त का मूल्य समझे। अब कोई स्कूल में पढ़े, कॉलेज की पढ़ाई करे, या कोई नौकरी कर के शानदार करियर बनाना चाहे तो इसके लिए टाइम मैनेजमेंट बहुत जरुरी है। सिर्फ स्कूल, कॉलेज में ही नहीं बल्कि हर जगह टाइम मैनेजमेंट जरुरी है। टाइम मैनेजमेंट का मतलब है स्पष्ट तौर पर किए गए लक्ष्य को एक निश्चित समय में सफलतापूर्वक हासिल करना। अगर लक्ष्य नहीं होता तो टाइम मैनेजमेंट की ज़रूरत नहीं होगी। टाइम को ठीक तरीके से मैनेज नहीं करेंगे तो लक्ष्य को कभी नहीं पा सकते। इसके लिए एक रूटीन तैयार करके हर दिन उसके अनुसार चलना चाहिए। ऐसा करने पर टाइम मैनेजमेंट ठीक होगा और कभी आपको काम में कोई बाधा नहीं आएगी। वक्त के चलने से आपकी ज़िंदगी आसान हो जाएगी।

कादम्बिनी पांडा, +3 तृतीय वर्ष

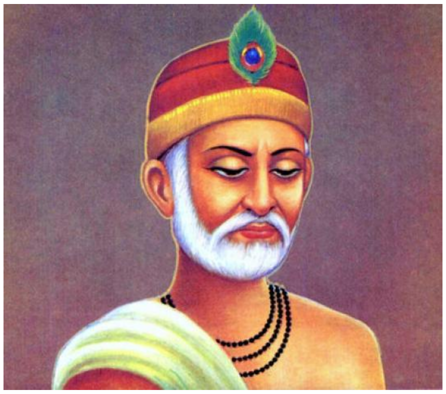

सन्त कवि कबीर

कबीर सन्त कवि और समाज सुधाराक थे| यह सिकन्दर लोदी के समकालीन थे| कबीर का अर्थ अरबी भाषा में महान होता है| कबीर दास हिन्दी की भक्ति काव्य परम्परा के महान कवियों में से एक थे| भारत में धर्म, भाषा या सांस्कृतिक किसी की भी चर्चा, बिना कबीर की चर्चा के अधूरी ही रहेगी| कबीरपंथी, एक धार्मिक समुदाय है जो कबीर के सिद्धान्तों और शिक्षाओं को अपनी जीवन शैली का आधार मानते हैं|

<u>जीवन</u> - कबीरदास जी का जन्म 1455 में और देहान्त 1575 में हुआ था| इस्लाम के अनुसार कबीर का अर्थ अरबी भाषा मे महान होता है| कबीर दास हिन्दुओं के लिए वैष्णव भक्त, मुसलमानों के लिये पीर, सिक्खों के लिये भगत, कबीरपंथी के लिये अवतार, अधुनिक राष्ट्रवादियों के लिए हिन्दु - मुस्लिम ऐक्यवादी एवं नव वेदांतियों के लिए "विश्व धर्म या मानव धर्म प्रवर्तक", प्रगातिशील तत्वों की दृष्टि में "समाज सुधारक" जातिवाद के विरोधी, समाजिक से कमजोर वर्ग के पक्षधर, क्रांतिकारी और क्षमता, बंधुत्व - भावना, न्याय तथा एकता के प्रतिष्ठापक के रुप में मान्य हैं| कबीर दास जी की परवरिश करने वाले बेहद गरीब मुस्लिम जुलाहा दंपति थे| जिनका नाम नीरु और नीमा था| अब यह घर विध्यार्थियों के ठहरने की जगह बन चुकी है, जो कबीर की रचनाओं को पढ़तें हैं| कबीर हिन्दी साहित्य के संत शिरोमणि हैं| डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार बंगाल में हिन्दुओं और मुसलमानों के मेल से एक जाति बनी थी, जिसका नाम था "जोगी"| रामानंद ने एक ब्राह्मणी पर प्रसन्न होकर, यह न जानते हुए कि वह एक विधवा है उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया| उसी के गर्भ से कबीर उत्पन्न हुए| जुलाहा माता - पिता ने कबीर जी का नामकरण काजी से करना चाहा |

<u>व्यक्तित्व</u> - कबीरदास जी 15 वीं सदी के भारतीय रहस्यवादी कवि और सन्त थे | वे हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक थे | इनकी रचनाओं ने हिन्दी प्रदेश के

भक्ति आंदोलन को गहरे स्तर तक प्रभावित किया |उनका लेखन सिक्खों के आदि ग्रन्थ में भी मिलता है |संत कबीरदास हिन्दी साहित्य के इकलौते ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडम्बरों पर विरोध करते रहे |वह कर्म प्रधान समाज के पक्षधर थे और इसकी झलक उनकी रचनाओं में साफ मिलती है |कबीर की वाणी का संग्रह बीजक के नाम से प्रसिध्द है |वे हिन्दु धर्म व इस्लाम के आलोचक थे |उन्होंने यज्ञोपवीत और खत्ना को बेमतलब करार दिया और इन जैसी धर्मिक प्रथाओं की सख्त आलोचना की थी |कबीर पंथ नामक धर्मिक सम्प्रदाय इनकी शिक्षाओं के अनुयायी है |

जन्मस्थान के बारे मैं विद्वानों का मतभेद है, परंतु अधिकतर विद्वान इनका जन्म काशी में ही मानते हैं, जिसकी पुष्टि स्वंय कबीर का यह कथन भी करते है -

" काशी में प्रकट भये, रामानंद चेताये "

कबीर के गुरु के सम्बन्ध में प्रचलित कथन है कि कबीर को उपयुक्त गुरु की तलाश थी |वह वैष्णव संत आचार्य रामानंद को अपना गुरु बनाना चाहते थे, लेकिन उन्होंने कबीर को शिष्य बनाने से मना कर दिया | लेकिन कबीर ने अपने मन में ठान लिया कि स्वामी रामानन्द को ही हर कीमत पर अपना गुरु बनाऊँगा |इसके लिए कबीर के मन में एक विचार आया कि स्वामी रामानन्द जी सुबह चार बजे गंगा स्नान करने जाते हैं |उसके पहले ही उनके जाने के मार्ग में सीढ़ियों पर लेट जाऊँगा और उन्होंने ऐसा ही किया |एक दिन, एक पहर रात रहते ही कबीर पंचगंगा घाट की सीढ़ियों पर लेत गये, रामानन्द जी गंगा स्नान करने के लिए सीढ़ियों से उतर रहे थे तभी उनका पैर कबीर के शरीर पर पड़ गया |उनके मुख से तत्काल "राम - राम" शब्द निकल पड़ा |उसी राम नाम को कबीर ने दीक्षा - मन्त्र मान लिया और रामानन्द जी को अपना गुरु स्वीकार कर लिया |

<u>कृतित्व</u> - कबीर को वास्तव में एक सच्चे विश्व - प्रेमी का अनुभव था |कबीर को शांतिमय जीवन प्रिय था और वे अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे |अपनी सरलता, साधु स्वभाव तथा संत प्रवृति के कारण आज विदेशों में भी उनका समादार हो रहा है |कबीर दास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी प्रतिभा में अबाध गति और अदम्य प्रखरता थी | आधुनिक समाज में कबीर को जागरण युग का अग्रदूत कहा जाता है |हिन्दु - मुसलमान सभी समाज में व्याप्त रूढ़िवाद का खुलकर विरोध किया |समीक्षकों की दृष्टि में कबीर ग्रंथावली बीजक और आदि ग्रन्थ कबीर की प्रामाणिक हैं |गुरु ग्रंथ साहब में उनके 200 पद और 250 साखियाँ हैं | काशी में प्रचलित मान्यता है कि जो यहाँ मरता है उसे मोक्ष प्राप्त होता है |रुढ़ियों के विरोधी

कबीर को यह कैसे मान्य होता |वे अपनी मृत्यु को सन्निकट जान काशी छोड़ मगहर चले गये और वहीं उनकी मृत्यु हुई |मगहर में ही उनकी एक मजार है और वहाँ पर उनकी समाधी है |

हाफिजा बेगम, +3 द्वितीय वर्ष

समय का सदुपयोग

एक किसान बैलगाड़ी पर खाद लाद कर आ रहा था। रास्ते में उसे एक चमकदार पत्थर दिखाई देता है। उसने पत्थर उठा कर एक बैल के गले में बाँध दिया। दूसरी तरफ से एक जौहरी घोड़े पर आ रहा था। उसने सोचा, यह बड़ा मूर्ख व्यक्ति है, जिसने इतना किमती पत्थर बैल के गले में बाँध दिया है। उसने कहा, क्यों भाई, एक बैल के गले में यह शोभा नहीं देता है। यह मुझे दे दो। मैं अपने घोड़े के गले में बाँध लूँगा। बोला, कितने में दोगे पत्थर? किसान ने सोच विचार कर कहा, एक रुपया दे दो। जौहरी कंजूस था। उसने सोचा किसान को इस पत्थर के बारे में कुछ पता तो है नहीं। वह बोला, एक रुपया ज्यादा है आठ आने ले लो। किसान ने मना कर दिया। जौहरी यह सोच कर आगे चला गया कि अभी किसान बुला कर दे देगा। वह जौहरी थोड़ी दूर गया ही था कि एक दुसरा जौहरी आ गया। उसने भी पत्थर देखा। उसने कहा, भाई इस पत्थर को बेचोगे? क्या लोगों? किसान ने सोचा, डेढ़ रुपया कंहूगा तो एक पर सौदा हो जाएगा। उसने कहा, डेढ़ रुपया लूँगा। जौहरी ने तूंरत डेढ़ रुपये देकर पत्थर खरीद लिया, कुछ दूर जाकर पहले वाले जौहरी ने सोचा, ये तो असली हीरा है। एक रुपया देकर ही खरीद लूंगा, वह वापस लौटा तो देखा कि दूसरे जौहरी ने उसे खरीद लिया है। दूसरे जौहरी के जाने के बाद उसने किसान कहा, तुम तो बड़े मूर्ख हो। हजारों का हीरा कौडियों के भाव में बेच दिया है। जौहरी अपनी मूर्खता पर अपना सिर पटकने लगा। पीछे से एक संत आ रहे थे। उन्होंने सारी बातें सुनी तो जौहरी से कहा, किसान तो सीधा सादा है। उसे क्या पता कि यह पत्थर है या हीरा है। लेकिन तुम तो पारखी होते हुए भी महा मूर्ख और महाकंजूस निकले। जो व्यक्ति सही समय पर, सही सोच से तुरंत निर्णय नहीं लेता उनकी यही दशा होती है। अब पश्चाताप करने से क्या होगा?

शरीफा शरवारी, +3 द्वितीय वर्ष

जायसी एवं पद्मावत

'प्रेमपीर' के अमर गायक कविवर जायसी हिन्दी-साहित्य की प्रेमाश्रयी शाखा के विलक्षण कवि थे। वे शरीर से कुरूप और एकाक्ष, किंतु मन से सुन्दर तथा समदर्शी थे। जीवन के प्रभात में अति सामान्य जीवन-यापन करने वाले जायसी आगे चलकर अपने युग के पहुँचे हुए सूफी फकीर बन गये। दो विरोधी संस्कृतियों के एकत्व के सफल प्रयोक्ता के रूप में कविवर जायसी का स्थान अनुपम है। प्रेमपीर की धड़कन के दिव्य आलोक जायसी ने हिन्दुओं में प्रचलित पद्मावती और रत्नसेन की प्रेमगाथा का आश्रय लेकर गहरे सद्भाव तथा असीम भावुकता का परिचय दिया। प्रेम-गाथाओं की अपनी सरस परम्परा रही है और जायसी सम्भवतः उसके दिव्य अलंकार थे।

'पदमावत' महाकाव्य के 'प्रेमखण्ड' में प्रेम तत्त्व का निरूपण सूफी-प्रेमादर्श के आधार पर हुआ है। महाकवि जायसी का लक्ष्य प्रेम साधना के द्वारा प्रेम स्वरूप परमात्मा की अनुभूति और उपलब्धि कराना रहा है। यही कारण है कि 'पदमावत' में पदे-पदे प्रेम की प्रदक्षिणा प्रथित है। असीम सौन्दर्य-सागर ईश्वर-प्राप्ति का एकान्त आग्रह प्रेम का ही प्रति रूप है। संसार के कण-कण में परम प्रिय विभु का सौन्दर्य विद्यमान है। सौन्दर्य की सत्ता ही संसार का आधार और सार है। उस अखण्ड सौन्दर्य-सत्ता की उपलब्धि एवं अनुभूति का एक मात्र माध्यम प्रेम है। जायसी ने इसी प्रेम की चिरन्तन भावना का निरूपण कर उसे सम्पूर्ण 'पदमावत' में प्रेमातिशयता का प्रकाश भर दिया है।

दिव्य प्रेमोपलब्धि के उपरान्त प्रेमी कामना रहित हो जाता है अर्थात निष्काम हो जाता है। ऐसे ही निष्काम प्रेम का अनुभव कराते हुए जायसी ने कहा है-

"न हौं सरग क चाहौं राजू। ना मोहि नरक सेंति किछु काजू।

चाहौं ओहि कर दरसन पावा। जेइ मोहि आनि पेम पथ लावा।।"

प्रेम के स्वरुप का दिग्दर्शन जायसी ने स्थान पर किया है| कहीं तो यह स्वरुप लौकिक ही दिखाई पड़ता है ओर कहीं लोकबंधन से परे| पिछले रुप में प्रेम इस लोक के भीतर अपने पूर्ण लक्ष्य तक पाहुंचता हुआ नहीं जान पड़ता है जो अपने प्रेम से संपूर्ण जगत की रक्षा करता है| प्रेम तत्त्व का महिमागान करते हुए कवि कहता है कि, जिसके हृदय में प्रेम का निवास है, उसे अग्नि भी चन्दन के समान शीतल प्रतीत होती है। लेकिन प्रेम रहित हृदय के लिये अग्नि अत्यन्त भयावह है। प्रेमाग्नि में जलने वाले का जलना कभी निष्फल नहीं होता-

"जेहिं जिय पेम चँदन तेहि आगी। पेम बिहून फिरहिं डरि भागी।।
पेम की आगि जरै जो कोई। ताकर दुख अविरथा होई।।"

पद्मावत महाकव्य में रत्नसेन "आत्मा" ओर पद्मावती "परमात्मा" का प्रतीक है| इन्हीं दोनों पात्रों के प्रेमाख्यानो के माध्यम से कवि ने आध्यात्मिक प्रेम का संकेत दिया है|
प्रिय से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तुएं भी कितनी प्रिय होती है| प्रिय की ओर ले जानेवाला मार्ग नागमती को कितना प्रिय होगा, उसी के मुख से पता चलता है -

"वह पथ पलकन्ह वो हारों
सीस चरन के चलों सिधारों |"

अर्थात वह पथ पर पलक विछाने या उसे पलकों से बुहारने की बात उस अवसर पर कही जाती है जब प्रिय उस मार्ग पर चलने के लिए नागमती ही तैयार है|प्रेम पर नजर डालते हुए जायसी ने प्रेमतत्व ओर उसके मूल्यबोध को दिखाया है| जायसी के मतानुसार प्रेम की एक चिंगारी मात्र हृदय में अमित ज्वाला प्रज्वलित करने में सक्षम होती है, जिसमें संपूर्ण लोक विचलित हो उठता है --

"मुहमद चिनगी अनंग की सुनि महि गंगन डेराइ |
धनि बिहरी ओ धनि हिया जेहि सब आगि समाइ |"

इतना ही नहीं, जब ह्रदय में प्रेम जाग्रत होता है तो प्रेमी की दशा मुत्यू से भी अधिक भयानक हो जाती है| जायसी आपाद मस्तक प्रेम से सराबोर थे। उन्होंने परम सौन्दर्य मय परमात्मा की अतुलनीय छवि के प्रति अनुराग उत्पन्न करने की दृष्टि से 'पदमावत' की लौकिक कथा को प्रतीकात्मक आधार बनाया। साथ ही अपनी अन्तर्मुखी प्रेम साधना का विलक्षण परिचय भी दिया। लौकिक आख्यान के रूप में रत्न सेन- पद्मावती का प्रेम-वर्णन भी बहिरंग में परिलक्षित

होता है, मगर अन्तरंग की आभा आध्यात्मिक प्रेम से ओत-प्रोत है। रत्नसेन की परिस्थितियों की प्रस्तुति में कवि ने प्रभावमयता का अति संवेदनशील वर्णन किया है-

"पेम घाव दुख जान न कोई। जेहि लागे जानै पै सोई।।
परा सो पेम समुँद अपारा। लहरहिं लहर होइ बिसँभारा।।"

राजा रत्नसेन ने अनुराग शब्द का प्रयोग न करके 'माया' शब्द का प्रयोग किया है| यह उसके प्रेम के विकास के हिसाब से बहुत ठीक है| पहले पद्मावती को रत्नसेन के कष्ट की सूचना मिली है, तब उसका हृदय उसकी ओर आकर्षित हुआ है, अत: पद्मावती कि हृदय में पहले दया का भाव ही स्वभाविक है| जायसी ने प्रेम के संयोग और वियोग दोनों का मर्मिक वर्णन किया है | जायसी के प्रेम पीर की आँसूओं से समस्त सृष्टि गीली हो गई| पद्मावत में सयोग पक्ष का अत्यन्त सान्गोपान्ग स्वरूप है| प्रेम सौन्दर्य की श्रुष्टि करता है, यह सृष्टि सौन्दर्य एवं प्रेम के अतिरिक्त कुछ नहीं है| जीवात्मा एवं परमात्मा दोनों में सर्वात्मना एक्य भाव प्रदर्शित होता है| यह स्वभाविक है कि नारी से बढ़कर मधुर प्रेममयी प्रतीक को अपनी साधना का माध्यम बनाकर जायसी ने 'प्रेमतत्व' की महता प्रतिष्ठित की तथा आत्मा परमात्मा के महामिलन की परिकल्पना द्वारा अपने महान आध्यात्मीक दर्शन की रहस्यवादी प्रुष्ठ्भुमि तैयार की, जीवात्मा के आधार पर उस चिन्मय स्वरूप में एकाकार करना ही उनके प्रेमतत्व का मूल्यवोध है|

‘पद्मावत’ महाकाव्य में रत्नसेन ‘आत्मा’ और पद्मावती ‘परमात्मा’ का प्रतीक है। इन्हीं दोनों पात्रों के प्रेमाख्यानों के माध्यम से कवि ने आध्यात्मिक प्रेम का संकेत दिया है।

इस प्रकार जायसी ने जगत के नाना व्यापारों को प्रेम की आध्यात्मिक छाया से प्रतिभासित माना है। इसी आध्यात्मिक विरह से अभिभूत हो ‘रत्नसेन’ (साधक, जीव) अति व्याकुल हो ‘पद्मावती’ (परमात्मा) - की ओर आकृष्ट होता है। ‘गुरु’ (हीरामन तोता) ‘ब्रह्म’ (पद्मावती) - की प्राप्ति में सम्पूर्ण मार्ग-दर्शन करता है।

इस प्रकार कवि ने कथा-प्रसंगों के माध्यम से लौकिक प्रेम और सौन्दर्य के मध्य आध्यात्मिक प्रेम का अनुपम संकेत दिया है। वास्तव में जायसी के लिए प्रेम विरह - मिलन की क्रीड़ा मात्र नहीं, एक कठोर साधना है, जायसी ने लौकिक प्रेम द्वारा ईश्वरोन्मुख प्रेम की व्यंजना की है।

शबाना बेगम, +3 तृतीय वर्ष

रामचरितमानस में समन्वयवाद

'रामचरितमानस' तुलसी जी की कीर्ति का अमर स्तंभ है। भाव और कला दोनों ही दृष्टियों से यह एक उत्कृष्ट एवं अमर काव्य है। यह एक युग में रची गयी, किन्तु अनेक युगों की रचना बन गयी। तुलसी को अमर बनाने में समर्थ हुई। भारतीय जनसमाज को छूने की इसमें अद्भुत शक्ति है। तुलसी दास का मत है कि "नवरस जलधर है और रामकथा का भक्तिपूर्ण वर्णन विमल जल युक्त सरिता"-

"नवरस जल तप जोग बिरागा
ते सब जलचर चारु तड़ागा।
चली सुभग कविता सरिता सो
राम विमल-जल-जल भरि तासो"।।

इतना ही नहीं राम और ब्रह्म के मध्य सामंजस्य स्थापित करके तुलसी ने सगुण और निर्गुण के मध्य समन्वय को सुखकारी और सुदृढ़ बना दिया है।

"रामब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा"।

एक ओर तुलसी भारतीय संस्कृति के उज्जवल पक्ष को लेकर चले, तो दूसरी और उन्होंने युग की विभीषिका की ओर भी जनमानस को आकर्षित किया और उससे बचने के लिए, सावधान होने के लिए 'मानस' प्रस्तुत किया। मानस में आदर्श की पूर्ण रक्षा है। आदर्श गुरु, आदर्श माता-पिता, भाई, पत्नी, पुत्र, राजा एवं प्रजा आदर्श समाज का समग्र चित्रण मिलता है। मानस में भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल पक्ष अपने निखरे रूप में हमारे सामने आता है। कला की दृष्टि से भी 'मानस' उत्कृष्ट काव्य-कृति है। इसमें बड़े स्वाभाविक संवाद, श्लिष्ट चित्रण, अनोखी एवं अनूठी उक्तियाँ तथा कथा का अत्यंत नैसर्गिक प्रवाह मिलता है। तुलसी जी ने लिखा है-

"रामचरित जे सुमन अघाहीं, रस बिसेष पावा तिन नहीं"।।

समन्वय भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है, लोक नायक तुलसी जी ने बाल्यकाल से ही जीवन की विषम स्थितियों को देखा और भोगा था, इसलिये वे व्यक्तिगत स्तर पर वैषम्य की पीड़ा से परिचित हैं। उनकी आंतरिक दृष्टि समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन, सम्प्रदाय और साहित्यिक वैषम्य, असमानता, विच्छिन्नता, द्वेष और स्वार्थपरता की जड़ों को गहराई से नाप चुकी थी। उस युग में लोकमंगल केवल समन्वय से ही संभव था।

आचार्य डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, "लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। क्योंकि भारतीय जनता में नाना प्रकार की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियों, साधनाएँ, जातियाँ, आचार, निष्ठा और विचार-पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्ध देव समन्वयकारी थे, गीता में समन्वय की चेष्टा है और तुलसी दास भी समन्वयकारी है"। तुलसी जी का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, "रामचरितमानस" शुरू से अंत तक समन्वय का काव्य है।

★ वर्णाश्रम व्यवस्था:-

तुलसी युगीन समाज में जाति-पांति और अस्पृश्यता की समस्या थी। उच्च वर्ग के व्यक्ति निम्न वर्ग के व्यक्तियों को हेय दृष्टि से देखते थे। शूद्र वर्ण के लोग सभी प्रकार के सामाजिक एवं धार्मिक यहां तक कि शैक्षिक एवं मूलभूत अधिकारों से वंचित थे। ऐसे में तुलसी राम और उनकी भक्ति के द्वारा उन सामाजिक विषमताओं को दूर करते हैं। जैसे "रामचरितमानस" में ब्राम्हण गुरू वशिष्ठ को शुद्र कुल में उत्पन्न निषादराज से भेंट करते हुए दिखाकर ब्राह्मण एवं शुद्र के मध्य समन्वय भावना प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार राम और निषादराज एवं भरत और निषादराज की भेंट भी समन्वय भावना स्थापित करती है।

★ धर्म और आध्यात्मिक क्षेत्रों में समन्वय:-

धर्म के नाम पर अनेक सम्प्रदायों में आडम्बर,अनाचार,जटिलता, जैसी कुरीतियां पनप रही थी वहां भी तुलसी ने इस विषमता को समाप्त करने के लिए समन्वय का मार्ग अपनाया। उन्होंने शिव को राम का उपासक घोषित किया तो राम को शिव भक्त घोषित किया। तुलसी जी ने सेतु-निर्माण के समय भी राम से शिव की आराधना करवाकर समन्वय का आदर्श प्रस्तुत किया। हिंदी भक्ति साहित्य के सगुण और निर्गुण भक्ति धाराओं में भी समन्वय देखने को मिलता है। तुलसी जी के आने से पहले ही सगुण और निर्गुण भक्ति धाराओं में विभक्त हो चुका था। इनके समर्थको के बीच आपसी संघर्ष चलता रहता था। तुलसीदास ने इन विषमताओं को समाप्त करने के लिए सगुण और निर्गुण भक्ति धाराओं के बीच भी समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने अपने आराध्य श्रीराम को सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में देखा और उपासना की।

"हियँ निर्गुन, नयनन्हिं सगुन, रसना राम सुनाम।
मनहुँ पुरट संपुट लसत तुलसी ललित ललाम"।।

★ पारिवारिक समन्वय:-

तुलसी जी ने श्रीराम के परिवार के माध्यम से पारिवारिक समन्वय का उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने पिता और पुत्र, पति और पत्नी, सास और पुत्रवधु, भाई-भाई, स्वामी और सेवक के मध्य समन्वय भावना को प्रस्तुत किया है। श्रीराम जितने पितृभक्त थे उतने ही मातृभक्त भी थे। तथा माता-पिता भी राम के प्रति वैसे ही भक्ति रखते थे। वधुएँ जितना सम्मान अपनी सासों की करती थीं, उतना ही स्नेह उनकी सास ने भी किया था। इसी प्रकार भाई-भाई के प्रति प्रेम, श्रद्धा और भक्ति रखते थे। जब श्रीराम वनवास के लिए गए थे तब भरत श्रीराम जी की पादुका को राज सिहांसन पर रख कर पूजा करते है और शासन भार ग्रहण करते हैं।

★ दार्शनिक समन्वय:-

दार्शनिक मत के मध्य व्याप्त द्वेष को समाप्त करने के लिए तुलसी ने इनके मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने द्वैत-अद्वैत, विद्या-अविद्या, माया और प्रकृति, सत्य और असत्य, जीव का भेद-अभेद, भाग्य और पुरुषार्थ जैसी दार्शनिक विचार धाराओं के बीच समन्वय स्थापित किया। अतः उस समय धर्म की आड़ में ही सामाजिक शोषण और सामाजिक सुधार होता था।

★ ज्ञान-भक्ति के मध्य समन्वय:-

तुलसी जी ने ज्ञान और भक्ति के बीच अभेद स्थापित किया। उन्होंने कहा है कि भक्ति और ज्ञान में कोई भेद नहीं है। क्यों कि ये दोनों ही सांसारिक क्लेशो का नाश करने वाले है। तुलसी जी ने जनमानस की ज्ञान-मार्ग की कठिनाइयों से भी अवगत कराने प्रयास किया तथा भक्ति को ज्ञान की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास किया।

★ स्त्री-पुरुष के मध्य समन्वय:-

तुलसी दास जी ने अपने युग में स्त्री-पुरुष के बीच में जो भेद था, इनके मध्य भी संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया। जब रावण सीता को अपहरण करके ले गया था, तब श्रीराम अन्य विवाह कर सकते थे, परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। यज्ञ में सोने की सीता बनवाकर बिठाया गया परंतु श्रीराम जी ने अन्यत्र विवाह नहीं किया। तुलसी जी के 'रामचरितमानस' में यही उल्लेख है।

★ सभी प्राणियों के बीच समन्वय:-

तुलसी दास के काव्य 'रामचरितमानस' में श्रीराम जी के मन में सभी प्राणियों के लिए समभावना है। सेतु निर्माण के समय सब वानर सेना राम जी की सहायता करने के लिए आती है, तब राम जी ने उनको अपना लिया। रावण का भाई विभीषण राक्षस जाति का हो कर भी राम जी की आराधना करते हैं तब श्रीराम जी ने उसको भी अपना लिया। वानरों, भालुओं एवं राक्षसों से भी राम का प्रेमालिंगन आदि सद्व्यवहार उनकी निम्न वर्ग के प्रति सहानुभूति को ही दर्शाता है।

★ साहित्यिक क्षेत्र में समन्वय:-

तुलसी जी ने अपनी साहित्य साधना किसी एक शैली में नहीं की। बल्कि उस समय प्रचलित सभी काव्य शैलियों को अपना कर साहित्यिक समन्वय प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रबंध, मुक्तक और गीति आदि सभी काव्य शैलियों को अपनाया। उनका 'रामचरितमानस' एक श्रेष्ठ महाकाव्य है। उन्होंने अपने समय में प्रचलित ब्रज, अवधि और संस्कृत भाषाओं का समन्वय अपने काव्य में बहुत सुंदर शैली में किया है। अवधि में 'रामचरितमानस' उनकी साहित्यिक प्रतिभा की पराकाष्ठा है तो ब्रज में 'गीतावली' और 'दोहावली' उनकी श्रेष्ठ कृतियाँ है।

सूफियों की दोहा-चौपाई, चंद के छप्पय और तोमर आदि, कबीर के दोहे और पद, गंग की कवित्त-सवैया को ही नहीं वरन जनता में प्रचलित सोहर, तरछु, गीत आदि तक को उन्होंने रामकाव्यमय कर दिया। इस प्रकार उन्होंने काव्य की प्रबंध और मुक्तक दोनों शैलियों को अपनाया। उन्होंने कृष्ण काव्य की ब्रज भाषा और राम काव्य की अवधि भाषा दोनों का प्रयोग करके समन्वय भावना का परिचय दिया।

उपर्युक्त विवेचन के निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि तुलसी जी ने समन्वय-साधना द्वारा अपने युग के अनेक विरोधों को सहमति के धरातल पर लाने का प्रयत्न किया और जनता को वह शक्ति प्रदान की, जिसके बल पर वह तमाम संघर्षों को झेल सके।

इसमें सबसे बड़ी वजह है तुलसी साहित्य एवं विशेषकर 'रामचरितमानस' में अभिनय एवं स्थापित-सामाजिक पारिवारिक, नैतिक एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों में मूल्यबोध, क्योंकि समन्वय की भावना आदर्श मूल्यबोध की पराकाष्ठा है।

लिज़ा मिश्र, +3 तृतीय वर्ष

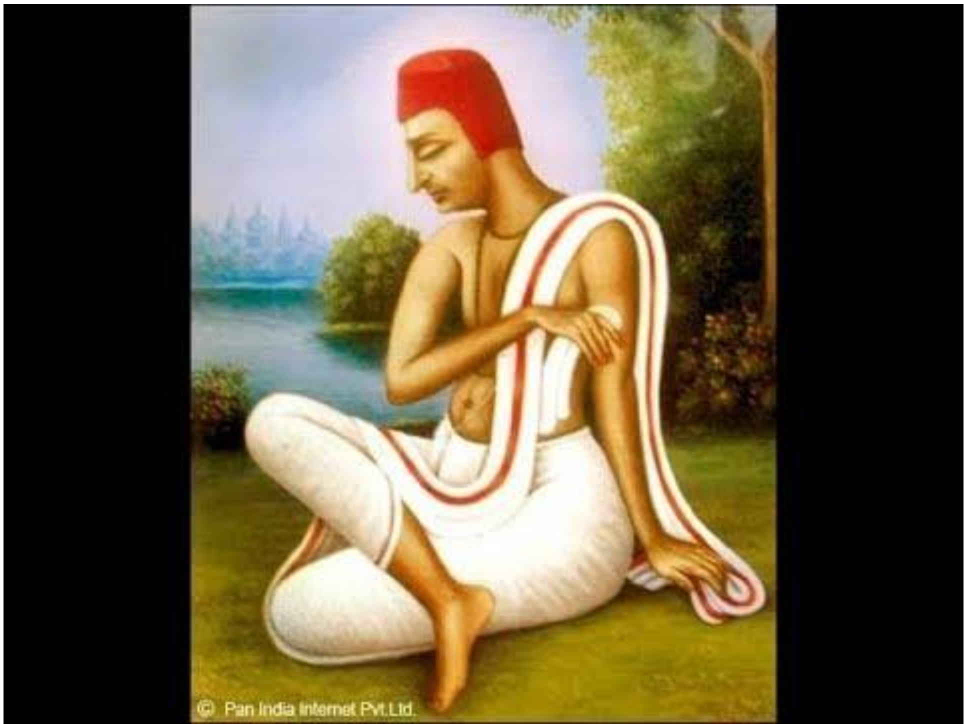

सूरदास की भक्ति पद्धति

हिंदी साहित्य में कृष्ण भक्ति की अजस्र धारा को प्रवाहित करने वाले भक्त कवियों में सूरदास का स्थान अग्रणी है। उनका जीवनवृत्त उनकी अपनी कृतियों से आंशिक रूप में और बाह्य साक्ष्य के आधार पर अधिक उपलब्ध होता है। 'चौरासी वैष्णव की वार्ता' में स्पष्ट रूप से लिखा है कि सूरदास का जन्म 1478 ई में दिल्ली के निकट ब्रज की ओर स्थित 'सीही' नामक गांव के एक गरीब ब्राम्हण परिवार में हुआ था। सूरदास जन्मांध थे या फिर बाद में अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि मिल्टन की तरह अंधे हो गए, यह बात आज तक विवाद की घेरे में रही है।

माता-पिता की निर्धनता और अपनी जन्मांधता के कारण उन्हें परिवार का प्यार नहीं मिल सका और वे बचपन में ही विरक्त हो कर घर से निकल गए। वार्ता ग्रंथ के अनुसार 1509-10 ई. के आसपास उनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य जी से हुई। सूरदास ने प्रभु वल्लभाचार्य से शिष्यत्व ग्रहण किया। वल्लभाचार्य के शिष्य बनने के बाद वे चंद्रासरोवर के समीप पारसोली गांव में रहने लगे थे। 1583 ई में उसी स्थान पर उनका देहावसान हुआ।

सूरदास काव्य का मुख्य विषय कृष्णभक्ति है। ड़ॉ. दीनदयाल गुप्त ने उनके द्वारा रचित पच्चीस पुस्तकों की सूचना दी है, जिनमें सूरसागर, सूररसावली, सहित्यलहरी, सूरपच्चीसी, सूररामायण, सूरसाठी और राधारसकेलि आदि प्रकाशित हो चुकी है। वस्तुतः 'सूरसागर' और

'सहित्यलहरी' उनकी श्रेष्ठ कृतियां हैं। 'भागवत' को उपजीव्य मानकर उन्होंने राधाकृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन 'सूरसागर' में किया है। 'भागवत' के द्वादश स्कन्धों से अनुरूपता के कारण कुछ विद्वानों ने इसे 'भागवत' की अनुरूपता समझने की भूल कर बैठते हैं, किन्तु वस्तुतः सूर के पदों का क्रम स्वंतत्र है। वैसे उनके मन में भागवत पुराण की पूर्ण प्रतिष्ठा है। उन्होंने कृष्ण चरित्र के उन भावात्मक स्थलों को चुना है, जिनमें उनकी अंतरात्मा की गहरी अनुभूति पैठ सकी है। उन्होंने श्रीकृष्ण के शैशव और कैशोर्य अवस्था की विविध लीलाओं का चयन किया है। लीला-वर्णन में कवि का ध्यान मुख्यतः भाव-चित्रण पर रहा है। विनय और दैन्य-प्रदर्शन के प्रसंग में जो पद सूर ने लिखे हैं, उनमें भी उच्चकोटि के भावों का समावेश है।

सूर की भक्तिपद्धति का मेरुदंड पुष्टिमार्गीय भक्ति है। भगवान की भक्त पर कृपा का नाम ही पोषण है: 'पोषण तदनुग्रह'। पोषण की भाव को स्पष्ट करने के लिए भक्ति के दो रूप बताये गये है :- साधना-रूप और साध्य-रूप। साधन-भक्ति में भक्त को प्रयत्न करना पड़ता है, किन्तु साध्य-भक्ति में भक्त सबकुछ विसर्जित करके भगवान की चरणों में अपने को छोड़ देता है। पुष्टिमार्गीय भक्ति को अपनाने के बाद प्रभु स्वयं अपने भक्त का ध्यान रखते हैं, भक्त तो अनुग्रह पर भरोसा करके शांत बैठ जाता है। भगवान का अनुग्रह ही भक्त का कल्याण करके उसे इस लोक से मुक्त करने में सफल होता है,जैसे की सूरदास ने अपने पद में लिखा है :-

"जा पर दीनानाथ ढरै।
सोइ कुलीन बड़ौ सुंदर सोई जा कृपा करै।
सूर पतित तरी जाय तनक में जो प्रभु नेक ढ़रै।।"

भगवत्कृपा की प्राप्ति के लिए सूर की भक्तिपद्धति में अनुग्रह का ही प्राधान्य है- ज्ञान, योग, कर्म यहां तक कि उपासना भी निरर्थक समझी जाती है। उन्होंने भगवदासक्ति के एकादश रूपों को वर्णन किया है। 'नारदभक्तिसूत्र' के अनुसार आसक्ति के एकादश रूप इस प्रकार है :- गुणमाहात्म्यासक्ति,रूपासक्ति,पूजासक्ति,स्मरणासक्ति,दास्यासक्ति,सख्यासक्ति,कांतासक्ति,वात्सल्यासक्ति, आत्मनिवेदनसक्ति,तन्मयासक्ति और परम विरहासक्ति। यद्यपि सूर ने इन सभी का वर्णन किया है, और तन्मयासक्ति में अधिक रमे हैं। परम विरहासक्ति भ्रमरगीत के पदों में बड़ी समीचीन शैली में व्यक्त हुई है।

भक्ति के दार्शनिक स्वरूप की ओर भी सूर का ध्यान बराबर रहा। सिद्धांत-पक्ष की स्थापना में उन्होंने वल्लभाचार्य के शुद्धाद्वैत और ब्रह्म, जीव आदि का वर्णन करते समय सूक्ष्म बातों का भी यथास्थान उल्लेख किया है। इतना ही नहीं, ईश्वर, माया, जीव, काल और सृष्टि-रचना का विशेष वर्णन करके उन्होंने अपने भक्ति सिद्धांतों को इतना पुष्ट और परिपूर्ण

बना दिया कि उनमें एक ओर जहां गहन दार्शनिकता आ गयी है, वहीं दूसरी ओर जीवन की कोमल भावनओं के कारण सुकुमारता, भावुकता और तल्लीनता की भी कमी नहीं है। उनकी भक्ति पद्धति का प्रमुख आधार पुष्टिमार्गीय सिद्धांत 'भगवादनुग्रह' ही था और इसीको केन्द्रबिन्दु मान कर सूरदास ने वात्सल्य-प्रेम आदि की व्यंजना करने में लीन रहें। भक्ति में कृपा की प्राप्ति का साधन उन्होंने प्रेम को माना। बाद में प्रेमभक्ति को अपना कर उन्होंने भगवत्प्रेम को ही भक्ति का मेरुदंड मान लिया और प्रेम की परिपूर्णता के लिए विरह का आवश्यक माना।

सूरदास ने अपनी भक्ति में ईश्वर के समक्ष अनेक प्रकार का विनय भावना व्यक्त किया है। स्वयं को सूरदास ने अपने ईश्वर का तुच्छ सेवक मानते हुए उनके समक्ष दैन्य प्रकट किया है। इस कारण सूरदास की भक्ति दास्य भक्ति कहलाती है,जिनमें भक्त स्वयं को ही अपने ईश्वर का दास मानकर उनकी सेवा और भक्ति करता है।

सख्यभक्ति 'सूरसागर' में दो रूप में प्रस्फुटित हुई है। पहले रूप के अंतर्गत गोप और ग्वाल के साथ कृष्ण का सखा रूप में विचरण करना और कृष्ण के अतिरिक्त किसी और में ध्यान ना रखना और दूसरा रूप है- गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम भाव और विरह वेदना का वर्णन।

सूरदास की भक्ति पद्धति का विवेचन-विश्लेषण करने के उपरांत निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि अपनी पदों और कविताओं के माध्यम से सूरदास भक्ति का सफल उपयोग करने में सफल रहे हैं। वे मूलतः एक भक्त कवि थे, न केवल एक तत्व-चिंतक दार्शनिक। इसीलिए उन्होंने वल्लभाचार्य की मान्यताओं का ज्यों का त्यों अनुसरण न कर अपनी मौलिक प्रतिभा द्वारा भक्ति का सहज और जनस्वीकार्य मार्ग प्रस्तुत किया। वे भक्त होने के साथ-साथ एक कवि भी थे। आरंभ में पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने से पूर्व जहाँ उनमें दास्यभाव की भक्ति की प्रधानता रही वहीं बाद में पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने के पश्चात उनमें साख्य, वात्सल्य और माधुर्य भावों की बहुलता आ गयी और उन्होंने इसके सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक पक्ष की सुंदर अभिव्यंजना अपने पदों में की। काव्य और भक्ति का ऐसा समिश्रण कहीं दुर्लभ है। इसी कारण सुरदास का भक्ति पद्धति अनन्य है और सूरदास हिंदी के भक्त कवियों में अपना उच्च स्थान रखते हैं।

श्रद्धांजलि भउल, +3 द्वितीय वर्ष

नदी का रास्ता

गर्मी का दिन था। घर में एक बूंद पानी नहीं है। शाम होने वाली थी कि मालती निकली और चली नदी की ओर पानी लाने। पीछे से सुधा ने आवाज दी -

- अरी ओ मालती, तनिक रुक तो। दौड़ी कहाँ जा रही है? मैं भी अती हूँ, रुक।

यों तो मालती सुधा से पहले इस गांव में विवाह करके आई थी, दोनों के उम्र में कुछ ज्यादा फरक भी न था। इसीलिए सुधा मालती को नाम से ही पुकारती थी।

- गर्मी के \ दिन में पानी कहाँ रहता है? न घर में ओर न ही घाट में। चल जल्दी, घर में एक घूँट तक पीने को पानी नहीं है।

दोनों चलते हैं। नदी गांव से लगभग चार किलोमीटर दूरी पर है। कुँए का पानी खराब हो गया और सरकार की कृपा से नल में भी पानी नहीं आता। कितनी बार शिकायत की गई, पर कोई सुने तब न। अब नदी ही एक मात्र सहारा है गांव के लोगों का। कुछ देर चलने के बाद सुधा ने बात छेड़ी।

- अरे कल वो हीरा के विवाह में गयी थी? क्या शानदार आयोजन था ना रे? तूने देखा ना?

- हाँ गयी तो थी पर ज्यादा देर तक रुक न पायी इनको कुछ काम था।

- हम्म.... बोल तो मालती। इतनी कच्ची उम्र में शादी करना क्या ठीक था? सिर्फ 17 साल की तो है। वो भी आज के जमाने में।

सुधा की इस बात पर मालती मुँह बिचकाकर बोली

- 18 की है, लेकिन लगती तो 28 की है। ऊपर से व्यवहार भी कुछ ठीक न था उसका। ऐसे में माँ बाप शादी न कराते तो क्या करते??

- हाँ, ये भी ठीक है। उसके दूल्हे को देखा? लगता है किसी बूढ़े से विवाह करा दिया है।

- ना रे मैंने तो नहीं देखा, लेकिन सुना है बहुत धनी है। इस में बूढ़ा हो या जवान क्या फर्क पड़ता है।

यही सब बातें करते करते नदी तक वे दोनों पहूँच गई, नदी के किनारे पहले से ही गुण बैठी हूई थी जो किसी चिंता में मग्न थी। मालती और गुण 2-3 महीने के अंतर में इस गांव में विवाह करके आयीं थी। मालती गुण को देख कर आवाज लगाई। गुण ने चौंक कर देखा तो मालती ओर सुधा उसके पास खड़ी थी।

- अरे गुण बहन यहाँ ऐसे क्यों बैठी हूई हो? रात होने को है, घर नहीँ जाना क्या तुझे? तेरा मुहँ भी सुख गया है। क्या प्रियतम के इंतजार में बैठी हूई हो?

गुण एक गहरी साँस लेती है और सुधा के मज़ाक को नजरअंदाज करते हूये कहती है ।

- कुछ नहीं रे, अभी लाली की माँ से मिलकर आ रही हूं। बिचारि बहूत उदास है। कहती है "पता नहीं मेरी लाली के भाग्य में क्या लिखा है? उसकी शादी हो पाएगी की नहीं। अब तो हीरा की भी शादी हो गयी है। 25 की होने को है, फिर भी कुवाँरी बैठी है।" कहते कहते रोने लगी रे। मैंने तो उसको समझाया लेकिन क्या उसकी चिंता कम होगी?

गुण की इस बात पर मालती ने भी दुखी हो गई और बोली

- रोये भी काहे नहीं? बेचारी मौसी क्या क्या करेगी? बाप तो आधे रास्ते में चल दिया, अपनी चिंता से मुक्ति पा लिया। और सारा बोझ मौसी पर डाल दिया।

सुधा प्रश्न की दृष्टि से उसे देखने लगी तो मालती ने उस दृष्टि को भांपते हूए कहा ।

- और नहीं तो क्या। तू तो इस गांव के बारे में कुछ जानती ना है। मुझसे पूछ ।

सुधा के प्रश्न की अपेक्षा न करते हूए मालती विद्रोही की तरह फिर बोली

- मौसी की तीन लड़कियाँ है। पहली वाली का तो जैसे तैसे विवाह हो गया। बाकी रह गए लाली ओर सुरीली। सुरीली न जाने किसके प्रेम में पागल थी जो उसको न पा सकी तो ज़हर पी लिया। कुछ तो कहते हैं कि वो गर्भवती भी थी।

पहली का विवाह तो हो गया, लेकिन पति शराबी निकला। रोज मरता पीटता था। एक दिन पंचो ने धमकी दे दी। शायद अब अच्छे से रहने लगा है।

बाकी रह गई लाली , इस का तो अब ऊपर वाला मालिक है ।

सुधा ने मालती की बातों को गौर से सुना और बोली

- पर लाली तो दिखने में सुंदर है, फिर दिक्कत क्या है? लड़के तो पागल हो जाते होंगे।

सुधा की इस बात को सुनते हूए गुण ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हूए कहा

- वो ऐसी लड़की नहीं है। अपनी बहन की हालत को देख उसने ज़िन्दगी भर किसी से प्रेम न करने का निर्णय ले लिया। फिर देहज नाम की कोई चीज़ भी होती है! मौसी तो एक एक पाई को तरसती है, दहेज कहाँ से लाएगी?

- हाय राम! इतना सब कुछ हो गया मुझे कुछ पता ना था।

- तुझे कहाँ से पता होगा। आधे से ज्यादा दिन तो तू अपने मायके में गुजार देती है। क्यूँ रे मालती है ना?

- क्या करूँ गुण, मुझे यहाँ रास नहीं आता। अपने सास के साथ रहकर मेरा दम घुटने लगता है। वरना मुझे क्या पड़ी कि मैं अपने परिवार को छोड़कर जाऊँ।

सुधा के इस बात पर मालती को अपने घर की याद आई जहाँ सब पानी और उसकी राह देख रहे होंगे। वो जल्दी से अपने मटके में पानी भर तेजी से चल दी ।
सुधा ओर गुण उसको जाते हुए देख रही थी।

पिंकी सिंह, +3 तृतीय वर्ष

ऋतुओं का परिवर्तन

ऋतुएं आती जाती हैं
जीवन का पाठ सिखती हैं
परिवर्तन ही जीनव हैं
बात ये हमें बताती हैं
सबसे पहले बसंत जो आये
रंग बिरंगे फूल खिलाये
कुदरत अपने रंग दिखाए
इसी तरह बन जाओ तुम भी
फिर हासिल कर सकते कुछ भी
हुनर को अपने काम में लाओ
जो सब के मन को भा जाए
वही विजय कहलाती है
जीवन का पाठ सिखाती है

फिर है ऋतु बरखा की आती
धूप से मारें को है बचाती
करती है ये बात निराली
चारों ओर करे हरियाली
जीवन में जब इसी तरह से
बुरा वक्त भी आता है
कोशिश कर लो तुम कितनी भी
लेकिन वे दूर न जाता है
मिलती हैं खुशियाँ फिर एक दिन
मेहनत अपनी रंग लाती है
ऋतुएं आती जाती हैं
जीवन का पाठ सिखाती हैं।

सोनाली सेठी, +3 तृतीय वर्ष

गुरु का स्थान

एक राजा था। उसे पढ़ने लिखने का बहुत शौक था। एक बार उसने मंत्री-परिषद् के माध्यम से अपने लिए एक शिक्षक की व्यवस्था की। शिक्षक राजा को पढ़ाने के लिए आने लगे। राजा को शिक्षा ग्रहण करते हुए कई महीने बीत गए, मगर राजा को कोई लाभ नहीं हुआ। गुरु तो रोज खूब मेहनत करते थे परन्तु राजा को उस शिक्षा का कोई फ़ायदा नहीं हो रहा था। राजा बड़े परेशान थे। गुरु की प्रतिभा और योग्यता पर सवाल उठाना भी गलत था क्योंकि वो एक बहुत ही प्रसिद्द और योग्य गुरु थे। आखिर में एक दिन रानी ने राजा को सलाह दी कि राजन आप इस सवाल का जवाब गुरु जी से ही पुछ ले।

राजा ने एक दिन हिम्मत करके गुरूजी के सामने अपनी जिज्ञासा रखी, "हे गुरुवर, क्षमा कीजियेगा, मैं कई महीनों से आपसे शिक्षा ग्रहण कर रहा हूँ, पर मुझे इसका कोई लाभ नहीं हो रहा है। ऐसा क्यों है?" गुरु जी ने बड़े ही शांत स्वर में जवाब दिया, "राजन इसका कारण बहुत ही सीधा सा है" । राजन ने कहा- "गुरुवर कृपा कर के आप शीघ्र इस प्रश्न का उत्तर दीजिये" राजा ने विनती की।

गुरूजी ने कहा, "राजन बात बहुत छोटी है परन्तु आप अपने 'बड़े' होने के अहंकार के कारण इसे समझ नहीं पा रहे हैं"। माना कि आप एक बहुत बड़े राजा हैं, हर दृष्टि से मुझ से पद और प्रतिष्ठा में बड़े हैं, परन्तु यहाँ पर आप का और मेरा रिश्ता एक गुरु और शिष्य का है। गुरु होने के नाते मेरा स्थान आपसे उच्च होना चाहिए, परन्तु आप स्वयं ऊँचे सिंहासन पर बैठते हैं और मुझे अपने से नीचे के आसन पर बैठाते हैं। बस यही एक कारण है जिससे आपको न तो कोई शिक्षा प्राप्त हो रही है और न ही कोई ज्ञान मिल रहा है। आपके राजा होने के कारण मैं आप से यह बात नहीं कह पा रहा था। कल से अगर आप मुझे ऊँचे आसन पर बैठाएं और स्वयं नीचे बैठें तो कोई कारण नहीं कि आप शिक्षा प्राप्त न कर पायें। राजा की समझ में सारी बात आ गई और उसने तुरंत अपनी गलती को स्वीकारा और गुरुवर से उच्च शिक्षा प्राप्त की ।

सस्मिता महान्ती, 3 द्वितीय वर्ष

आपकी बात

हिंदी भारती की मैं एक नियमित पाठिका तथा लेखिका भी हूँ । लोगों में प्रतिभाएं तो बहुत है लेकिन उस प्रतिभा को बाहर निकलना बहुत ही मुश्किल है । डॉ वेदुला मैडम ने हमारे अंदर की प्रतिभा को पहचान कर हिंदी भारती के जरिए उसे प्रकाशित करने का मौका दिया । हम छात्राओं के लिये ये बहुत बड़ी बात है । मुझे हर किसी के लेख में नवीनता दिखाई देती है । पढ़ने में रोचक जान पड़ते हैं । इसीलिए मैं सब को धन्यवाद देती हूँ कि वे इसी तरह लिखते रहें और हमें नई नई जानकारी भी देते रहें ।

पिंकी सिंह, +3 तृतीय वर्ष

मुझे बहुत खुशी है कि, ई पत्रिका, "हिंदी भारती" के "आपकी बात" स्तम्भ के द्वारा अपनी बात कह पा रही हूँ। इस पत्रिका के माध्यम से छोटी छोटी बातों का महत्व पता चलता है । इस पत्रिका के माध्यम हर एक विद्यार्थी का गुण पता चलता है। जो अब तक रात के अन्धेरों की तरह रहते थे, वह अब उजाला बन आप तक पहुँच रहें हैं। हमें सभी गुरुओं का आशीर्वाद इसी तरह मिलता रहे, ताकि हम अपनी ई पत्रिका को और ऊँचाईयों पर ले जा सके ।

सोनाली राउत, +3 तृतीय वर्ष

जहाँ पर नारी शब्द है वहाँ शोषण शब्द निश्चित रूप से होगा ही, ऐसी भ्रामक धारणा बन गई है। पर सिर्फ नारी के जीवन में शोषण नहीं होता है, शोषण कई तरह का होता है, ये बात मुझे सोनिया का 'शोषण' लेख पढ़ने के बाद पता चला। जगन्नाथ जी से यही प्रार्थना करूँगी कि हमारी ई-पत्रिका 'हिंदी भारती' बहुत आगे तक जाए, और ऐसे ही हम को लेख के माध्यम से शिक्षा प्रदान करती रहे।

लिज़ा मिश्र, +3 तृतीय वर्ष

भारतीय ई पत्रिका हमारे जीवन में एक मार्ग दर्शक के रूप में आया है। ई पत्रिका के माध्यम से हमें अनेक विषय पर बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है, साथ ही हमारे विभाग की छात्राएं ही नहीं बल्कि बाकी लोग भी इसके साथ जुड़ रहे हैं। यह हमारे लिए गर्व का विषय है। धन्यवाद

सोनिआ नायक, +3 तृतीय वर्ष

पिछले सारे अंकों की तरह हिन्दी भारती का जुलाई का अंक भी अपने आप में कुछ अलग है। खास कर मंजु रानी सिंह माम् द्वारा प्रस्तुत "अहिंसक समाज के लिए शिक्षा" सर्वोत्कृष्ट है, साथ ही मनीषा द्वारा प्रस्तुत कविता " चिरैया" अन्यतम है। यह दोनों लेख अपने आप में ही एक महत्वपूर्ण संदेश है, जो हमें आज के समाज की सच्चाइयों से थोड़ा और करीब से परिचित करवा रहे हैं ।

शुभश्री शताब्दी दास, +3 द्वितीय वर्ष

हमारे विभाग की ओर से प्रस्तुत "हिन्दी भारती" केवल एक ई पत्रिका ही नहीं बल्कि एक प्रेरणा का स्रोत भी बन गई है। इस ई पत्रिका के अंकों को पढ़ के हम जैसी छात्रायें प्रेरित होती हैं एवं कुछ अलग कर दिखाने के जज्बा को ये पत्रिका हिम्मत भी देती है । आशा करती हूं कि "हिन्दी भारती" हमें ऐसे ही प्रेरित करती रहे।

स्तुति प्रज्ञा दास, +3 द्वितीय वर्ष

'हिंदी भारती' हिंदी समाज में अपने आप को प्रतिष्ठित करने में सक्षम हो रही है, इससे मुझे बहुत हर्ष महसूस हो रहा है। जुलाई अंक में विशेषतः 'प्रेमचं जयंती' को ध्यान में रखते हुए प्रेमचंद जी की 'दो बैलों की कथा' को प्रकाशित किया, जिसमे प्रेमचंद जी ने बहुत ही कुशलता से बैलों के माध्यम से आपसी प्रेम के साथ रहने का संदेश दिया है। साथ ही चिरैया कविता मुझे बहुत पसंद आयी जिसमें आजकल लड़कियों पे हो रहे जुल्म और शोषण का चित्रण सठीक भाव से किया है। आशा है कि ऐसे ही हम सब के प्रयासों को हमारी डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी मैडम जी 'हिंदी भारती ' के माध्यम से प्रोत्साहित करतीं रहेंगी।

मनीषा साहू, +3 द्वितीय वर्ष

सवा सेर गेहूँ

प्रेमचंद

https://youtu.be/yZlcUVb8GjQ

यादों के गलियारों से

“हिंदी भक्ति साहित्य में मूल्यबोध” विषय पर विभाग में आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठि

“कलम” शृंखला में विभाग की छात्रायें

स्वधीनता दिवस की परेड में विभाग की सस्मिता

Kalam's eleventh edition makes a mark

Ratneshwar Kumar Singh and Gulam Moinuddin Khan

Rakesh Garg and Nidhi Garg

Abhishek Sharma

Anurag Kriti

The eleventh edition of the monthly literary evening, Kalam, saw good participation from the world of literature and literature enthusiasts of the city, who came together to listen to and discuss with the celebrated author **Ratneshwar Kumar Singh**. The writer kept the audience engaged with his interactions with **Gulam Moinuddin Khan**, associate professor of Hindi, BJB Autonomous College, followed by a question and answer session.

The event was organised by Kolkata-based Prabha Khaitan Foundation at Mayfair Hotels and Resorts and presented by Shree Cements Limited. **Vedula Ramalakshmi** welcomed the guests and explained the audience about the Kalam series that has been going on in 17 cities in India and abroad.

The Patna-based author talked about his book *Rekhna Meri Jaan*, which was in the news last year, as Singh was offered a good amount of money by the publishing house to write for them. Singh had to research a lot to write this book that's based on a love story set in contemporary times when the world is grappling with issues like global warming and its effects and after-effects. Singh, who believes that he is born to be a writer, inspired the young minds present at the event.

After the discussions were over, renowned author **Gourahari Das** felicitated Singh while poet **Rakhsak Nayak** felicitated Khan. The event concluded with guests collecting a copy of the book autographed by the author.

— Sandip.Bal
@timesgroup.com

Vedula Ramalakshmi with students, (below) Rakhsak Nayak

ଡେୟାର ଡେଭିଲ୍‌ରେ 'ରାଫେଲ୍'

धन्यवाद